आरती उतारूं तेरी गौरा मां के लाल

आरती उतारूँ तेरी गौरा जी के लाल
==========
गणाधीश, गजानन*, दीन दयाल ॥,
आरती, उतारूँ तेरी, गौरा माँ के लाल ॥

लम्बोदर, चतुर्भुज*, लीला तेरी न्यारी है।
वक्रतुण्ड, महाकाय, मूसे की सवारी है।।
तेरे भक्त, भर भर लाएं,,,हो,,,* ॥, लड्डुयन के थाल,,,
आरती, उतारूँ तेरी, गौरा माँ के लाल ॥

रिद्धि सिद्ध, पत्नी तेरी*, शुभ लाभ दो है सुत।
तेरी पूजा, करने वाला, हो जाएं पापों से मुक्त ॥
जय गणेश, बोलो कटे,,,हो,,,* ॥, संकटो के जाल,,,
आरती, उतारूँ तेरी, गौरा माँ के लाल ॥

ब्रम्हा विष्णु, रुद्र सबसे*, पहले पूजा तेरी है।
कार्य सिद्ध, हेतु तेरी, कृपा भी जरूरी है ॥
शंख बाजे, घण्टा बाजे,,,हो,,,* ॥, झाँझरो की ताल,,,
आरती, उतारूँ तेरी, गौरा माँ के लाल ॥

नेत्रहीन, नेत्र पावै*, बलहीन पावै बल।
रोग ग्रस्त, नमन करे, रोग जाएं सारे टल ॥
बुद्धि के, विधाता तुझे,,,हो,,,* ॥, ध्यावे संसार,,,
आरती, उतारूँ तेरी, गौरा माँ के लाल ॥

माटी से, बनाया माँ ने*, प्रथम तुझे पूजा है।
तेरे जैसा, एकदन्त, देव नहीं दूजा है ॥
नंदी ध्यावे, मूषक ध्यावे,,,हो,,,* ॥, ध्यावे संसार,,,
आरती, उतारूँ तेरी, गौरा माँ के लाल ॥॥

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33585/title/ARTI-UTARU-TERI-GAURA-MAA-KE-LAL

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |